सं ग्रो वि /रोह/103-86/43332.--बूंकि हरिवाणा कं राज्यपाल की राय है कि कै हरियाणा सहकारी शुगर मिल्ज, रोहतक, के श्रमिक श्री श्रीभगवान, पुत्र श्री शिवनारायण शर्मा, मार्फत श्री सुन्दर सिंह, महासचिव, जिला सीट् कमेंटी, रोहतक, तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीडोगिक विवाद है ;

श्रीर वृंकि हरियागा के राज्य<mark>पाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वांछनीय समझते हैं ;</mark>

इसलिए, अब, आँबोगिक बिवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपचारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिनिनयों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1- श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्याबालय, रोहतक, को बिवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धिक नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद 3 मास में देने हेंतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामना है जा उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री श्रीभगवान की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित स्वा ठीस है ? यदि नहीं, तो वह सिस राह्नन का हकदार है ?

स॰ ग्रो॰ वि॰/रोह/105-86/43339.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ हरियाणा सहकारी गुगर मिल्ज, रोहतक, के श्रमिक श्री हवा सिंह, पुत्र श्री राम कुमार, मार्फत श्री सुन्दर सिंह, महासचिव, जिला सौटू कमेटी, रोहतक तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझे हैं;

इसलिये, अब, अौद्योगिक विवाद अविनियम, 1947, की बारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गईं शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अविसूचना स० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अविसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उस से सुसंगत या उससे सम्बंग्धित नीचे लिखा मामना न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित हैं —

क्या श्री हवा सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं क्यो वि ब नि में वि हिर्सिणा सहकारी शुगर मिल्ज, रोहतक, के श्रमिक श्री हरी राम, पुत्र श्री भ्रमर सिंह, मार्फत श्री सुन्दर सिंह, महासचित्र, जिला सीटू कमेटी, रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मीबोगिक विवाद है;

थौर कृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यावनिर्णेव हेतु निविच्ट करना वांक्नीव समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीकोगिक विवाद अविनियम, 1947, की बारा 19 की रुपबारा (1) में बच्छ (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अविस्तृत्वना बं • 9641-1-अन-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रविसूत्वना की धारा 7 के अधीन गढिस अन न्याबालय, रोहतक को विवादतस्त या उत्तसे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याबनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या उन्त किश्वत के मुसंगत सम्बन्ध सम्बन्ध करा है:—

क्या श्री हरी राम की सेवाओं का समापन व्यावीचित तथा ठीक है ? वदि नहीं, सो वह किस राहत का हुकदार है?

सं भोविव /रोह/106-86/43353--- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राव है कि मैं हरियाणा सहकारी शुगर मिलन, रोहतक, के श्रीमक श्री राजवीर, पुत्र श्री महा सिंह, माफंत श्री सुन्दर सिंह, महासचिव, जिला कीटी सेहतक तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई प्रौद्योगिक विवाद है;

1

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेंतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 0 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद- शस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अधवा सम्बन्धित हैं :---

क्या श्री राजबीर की मैवाधों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

मं बो विविश्व सही 107-86 43360.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं हरियाणा सहकारी शुगर मिहज, रोह्नक, के श्रमिक श्री गुरमीत सिंह, पुत्र श्री करनेल सिंह, मार्फेन श्री मुन्दर सिंह, महासचिव, जिला सीटू कमेटी, रोह्नक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई बौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिमूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी मिश्रिव्यक्ता की बारा 7 के प्रश्रोत प्रति अम न्यायालय, रोहतक, को दिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन माम में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो दिवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री गुरमीत सिंह की मेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० द्यो वि०/रोह/111-86/43367. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० हरियाणा सहकारी शुगर मिल्ज, रोहतक, के श्रमिक श्री प्रशोक कुमार, पुत्र श्री शिव नारायण, मार्फत श्री सुन्दर सिंह, महासचिव, जिला सीटू कमेटी, रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल जिवाद को न्यायतिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारों प्रधिसूचना की धारा 7 के प्रधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनन प्रबन्धकों तथा अभिक के बोच या तो विवाद प्रस्त मामना है या उनन विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री श्रणोक तृमार को से अप्रों का समान स्वाबीचित तथा ठीक हैं ? यदि नहीं, तो बहु किस **सहत का** हकदार है ?

सं श्रोविव | रोह | 109-86 | 43374. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैंव हरियाणा सहकारी शुगर मिल्ज, रोहतक, के श्रमिक श्री केंग्रे, पुत्र श्री ठा, मार्क्त श्री सुरहर मिह, महाविच्य, जिला सीटू क्षेटी, रोहतक तथा उसके श्रहन्यकों के बोच इसमें इसके बाद लिखित मार्ज में कोई श्रीधीयक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, मौद्योगिक विवाद श्रविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक

6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसृजना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोह्तक, को विवादगस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रम्कि के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है :—

क्या श्री केंगो की सेवाधों का समापन न्यायोजिय तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संब्रों विव्/रोह/110-86/43381.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं इित्याणा सहकारी शुगर मिल्ज, रोहतक, के श्रमिक श्री लखमी चन्द, पुत्र श्री रामण्ल, मार्फत श्री सुन्दर सिंह, महासचिव, जिला सीटू कमेटी, रोहतक तथा उसके प्रवन्धकों के बीच डममें इसके बाद लि इत मामलें में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वा नीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947, की धारा 10 की उपद्यारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवस्यों का प्रयोग करते हुए हिन्याणा ने राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ पिटत सरकारी ग्रिविस्चना की धारा 7 के ग्रिवीन गरित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे स्संगत या उससे सम्बन्धित में चे लिखा स्थारणा स्थारित प्रवाद की माम में देने हैत् निविष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवादकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से स्संगत ग्रथवा सम्बन्धित है:—

बया श्री लख्मी चन्द की सेवाग्रों समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संब्र्योविव /रोह/112-86/43388.— चं कि हीरयाणा के राज्यपाल की राय है कि मैठ हिरयाणा महकारी शुगर मिल्ज रोहतक, के श्रमिक श्री वाबू लाल, पुत्र श्री देवाजीत, मार्फत श्री स्नदर निह, महामित्रव, जिला सीटू कमेटी, रोहतक तथा एसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है,

मीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का श्रयोग करते हुए हिन्याणा के राष्ट्रयाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं०9641-1-श्रम 78/ 32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गटित सन्कारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या एससे मुसरत दा एससे सम्बन्धित नै चै लिख मामला न्यायिन ग्रंय एवं पंचाट तीन मास में दैने हैं हु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्ष्या श्री बाबू लान की सेबाक्रों का समापन स्थायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्ष्यात्र है ?

मं० थ्रो । वि०/रोह/93-86/43396.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । हरियाणा सहकारी शुगर मिल्ज, रोहतक, के श्रमिक श्री सतबीर सिंह, पुत्र श्री पृथ्वी सिंह, मार्फत श्री सुन्दर मिंह महासचिव, जिला सीटू कमेटी, रोहतक तथा उसके प्रथम्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई थ्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिंदियों वा प्रयोग करते हुए हिन्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1शम 78/32573, दिनांक 6 नदम्पर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अस न्यायालय, रोहतक, को विवादअस्त या उर रे रूरगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उवत प्रदन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या उत्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित हैं:—

क्या श्री सतबीर सिंह की से**वाम्रों का समापन न्यायौ**चित तथा 'ं है ? यदि नहीं, तो वह किस **राहत का** हकतार है ?